रविवार, दिनाँक 28-07-2024 को सत्संग हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरा साजन प्यारा मीत है, मीतों से बढ़कर मीत है,मेरा साजन प्यारा

मैंने उन संग जोड़ी प्रीत है, प्रीतों से बढ़कर प्रीत है, मेरा साजन प्यारा

सजनों यह एक अति उत्तम इच्छा है। जानो जिस सुरत की सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ श्री साजन जी से प्रीत हो जाती है, वह सुरत अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त होती है। जीवनकाल के दौरान भी उस सुरत का मन-चित्त शान्त व एकाग्र रहता है। यही नहीं इस सुन्दर अवस्था में उसे सदा आत्म-स्मृति रहती है कि मेरा यथार्थ क्या है और मैं हक़ीकत में कौन हूँ। इस तरह जो सुरत अपनी वास्तविकता को जान जाती है, वह अपनी कुदरती ज्ञान, गुण व शक्तियों से परिचित होकर ताकतवर हो जाती है। ऐसा होने पर ख्याल का घर में स्थित रहना, कोई असम्भव बात नहीं रहती। यही कारण है कि ऐसी सुरत दुनियाँ में विचरते हुए व अपने कर्त्तव्यों का सहर्ष निर्वहन करते हुए सदा निष्पाप बनी रहती है। यह एक चरित्रवान व खुशहाल मानव की तरह जीवन-यापन करने की यानि सदा सुख-आनन्द में रहते हुए, सुख ही बाँटने के प्रति तत्पर रहने की व परोपकार कमाने की बात होती है। ए विध् सजनों हर पहलू से जीवन को सुखद बनाना कोई कठिन कार्य नहीं रहता। इस संदर्भ में सजनों अब समय आ गया है कि केवल गाओ नहीं अपितु वचनों को प्रवान करने की आदत में भी ढल जाओ। नित्य-प्रति के वचन नित्य ही जीवन में उतार लेने पर जीवन में कभी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा यानि जीवन में कलुकाल के स्वभावों का आगमन सम्भव नहीं हो पाएगा। ऐसा होने पर ही आप अपने आत्म-स्वरूप यानि यथार्थ अवस्था में रहते हुए सहजता से यथार्थपूर्ण जीवन जीने में सफल हो पाओगे।

इस सन्दर्भ में जानो कि अभी आपका जीवन जीना अति दुःखद अवस्था में है क्योंकि अभी तो नितान्त बनावटी जीवन जी रहे हो। यही कारण है कि हमें दुःखों से छुटकारा नहीं मिल पा रहा और हमारे मन-चित्त का विश्राम अवस्था में आना एक नामुमकिन सी बात हो गई है। अब नामुमकिन को मुमकिन बनाना - इसके प्रति शास्त्र विहित विचारों अनुसार परिश्रम करना तो खुद के हाथ में है। इस विषय में हमारी आप सबसे प्रार्थना है कि आज के दिन खुद के खुद सजन बनो और अपने साथ वैर मत कमाओ। ऐसा इसलिए क्योंकि अपने साथ वैर कमाने वाला, सबके साथ वैर कमाने वाला व द्वि-द्वैष का भाव रखने वाला होता है, उसको कोई अन्य हँसता खेलता हुआ अच्छा नहीं लगता इसलिए वह दूसरों के जीवन में कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है। सजनों यह कलुकाल के नकारात्मक स्वभाव हैं जिन्हें त्यागना

है। इस विषय में अपने अन्तर्घट से कलुकाल के भाव-स्वभावों को तत्क्षण ही विदा करने हेतु जो भी शास्त्र विहित वाणी आज से बुलना आरम्भ होगी उसे समझना है क्योंकि आज से हर तरीके से शास्त्र द्वारा आपको कलुकाल की पहचान कराई जायेगी। अतः अपनी कमियों को पहचानने में कमजोर मत पड़ना और कलुकाल के स्वभावों से जो मानसिक तौर पर हानि होती है, जो तीनों तापों का रोग लग जाता है उनसे छुटकारा पाने के लिये, उससे पूर्ण स्वतन्त्रता पाने के लिये, इन कलुकाल के कीर्तनों का एक-एक शब्द समझना और आत्म-निरीक्षण करना कि कितनी मात्रा में कलुकाल आपके हृदय में घर कर चुका है, जिसके कारण सत्य लुप्त हो गया है। अब आपके हृदय में वह सत्य पुनः उजागर हो जाये यानि 'आत्मा में जो परमात्मा है' उसका साक्षात्कार हो जाये और आप निहाल हो जायें, वैसा सद्परिणाम प्राप्त करने के लिये एक-एक शब्द को अर्थ सहित समझते जाना। सजनों यह अपने अन्तर्घट में आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़ने की बात है क्योंकि आप स्वार्थ से परमार्थ बनने जा रहे हो। यह तीन महीने का पाठ्यक्रम है। मन से दुर्भावों की सफाई हेतु आपको चैत्र के यज्ञ पर यह कार्य सौंपा गया था। अब पहले जो हुआ सो हुआ परन्तु अब कमजोर मत पड़ना अन्यथा जो गदे का यज्ञ आने वाला है उसमें आप वांछित परिणाम प्राप्त करने में सफल नहीं होंगे। इस तरह तीन महीनों में मन की सफाई में कमजोरी का दुष्परिणाम आपको आगामी जीवन में भी नुक्सान प्रदान करेगा। ऐसा न हो यानि आपका भविष्य उज्ज्वल हो और आप उज्जवलता के प्रतीक बनो उसके लिये परिवारजनों को भी साथ ले उनके सजन कहलाओ और पूरा परिवार दिल से दिल मिलाकर एक मत हो जाओ। जब हम 'एकमत' कहते हैं तो उसका तात्त्पर्य है कि जीवन में जो भी करो वह सत्य का प्रतीक हो। इस तरह हमारे अन्तर्घट में रजोगुण व तमोगुण के स्थान पर सतोगुण प्रधान हो। जब ऐसा हो गया तो ऊपर उठने यानि परमार्थ की तरफ बढ़ने में कोई कठिनाई नहीं रहेगी। आशय यह है कि फिर पाँच ज्ञानेद्रियों का टप्पा मारना हमारे लिये कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। निःसन्देह तब आपका जीवन सफल हो जायेगा। तो यह सफलता की कुन्जी है। बोलो तीन महीने के लिये तैयार हो जी? 'हाँ जी'।

अगर हाँजी है तो स्वयं से वायदा कर लो कि चाहे कुछ भी हो मुझे तीन माह के भीतर अन्दर की सफाई कर अपने मन को पवित्रता का प्रतीक बनाना ही बनाना है। इस संदर्भ में इतनी उमर ऐसे ही व्यर्थ गँवाई परन्तु अब जीवन के तीन महीने आत्म-उद्धार हेतु समर्पण कर दो। अब ध्यानपूर्वक सुनोः-

गुप्त रूप महाबीर जी आया ए, शान्ति दा मार्ग दिखाया ए।

हुण नींद कहां भैणां नींद कहां, अनाहद वाजे दा शब्द सुनाया ए।।

मोह माया दी नींद में भैणां सोईयां, सुतियां दासियां नू महाबीर जी जगाया ए।

महाबीर जी सच्चा घर दिखाया ए, अनहद वाजे दा शब्द भी आया ए।।

ऋषि मुनि गये नी हार सारे, भेद बली दा किसे न पाया ए।

कलयुग ने आन सताया ए, गांधी जेलां दा रस्ता दिखाया ए।।

महाबीर जी मन्त्र सिखाया ए, भैणां नू गूढ़ा रंग चढ़ाया ए।

काम क्रोध नू दिलों हटाया ए, दासियां नू जीवन मुक्त बनाया ए।।

रंग ऐडा गूढ़ा चढ़ाया ए, जिन्हां धोवो लथन विच न आया ए।

असां भुलियां नू बली रस्ते लाया ए, रघुनाथ जी दी चरणीं बिठाया ए।।

अपना नाम बली जी ने बताया ए, रंग महंदी दा बली जी चढ़ाया ए।

रघुनाथ जी दी लीला दिखाई ए, झूठी दुनियां दी सुध बुध भुलाई ए।।

दासी ऐह अर्ज गुजारी ए, हुण तारो सृष्टि सारी ए।

इस भजन को सुनने के पश्चात हम तो यही कहेंगे कि हम सब तो क्या, कुल सृष्टि ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की शरणी है। इस विषय में जो सजन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित वाणी को यानि सत्य विचारों को दिल से मानता है और उसे धारण कर वैसा ही अपने व्यवहार में लाना उचित समझता है, वह सजन भाग्यशाली होता है। तो सजनों अपना भाग्य जगाने के लिये यह विधि आज से ही अपनानी होगी क्योंकि आप सबकी सफलता हेतु सच्चेपातशाह जी ने इस भजन के माध्यम से कह दिया है कि हे मेरे सजनों ! यदि आप तीन महीनों में मन की सफाई कर शान्ति स्थापित करना चाहते हो तो उसके लिये ऐसा एहसास या महसूस करो कि, आपकी सहायतार्थ गुप्त रूप में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी आपके हृदय में आ गये हैं। अतः उनका स्वागत करो, आदर करो और इस क्रिया के उपरान्त उनके आगे अपना शीश अर्पण कर दो कि हे सुखदाता!, हे जीवन-उद्धारक ! आपका स्वागत है, स्वागत है, स्वागत है, अब मेरा बिगड़ा जीवन सँवारो। फिर पूर्ण समर्पित भाव से वही बोलो, वही सोचो व वही करो जो उनकी आज्ञा सतवस्तु के

कुदरती ग्रन्थ द्वारा आप तक पहुँच रही है। कहने का मतलब यह है कि क्रान्तिकारी स्तर पर अपनी चाल तबदील करो। इस शुभ क्रिया की सफलता के दौरान यदि पुराने स्वभाव परेशान करें तो उन्हें दूर से ही यह कह कर नमस्कार कर दो कि 'अब हम आपकी नकारात्मकता की वास्तविकता पूर्ण रूप से जान गये हैं। इस वास्तविकता को जानने के पश्चात् हमने आज से ही आपसी आज़ादी यानि स्वतन्त्रता का संकल्प ले लिया है और आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया है'। इस तरह उन्हें समझा दो कि हमनें दृढ़-निश्चय ले लिया है कि आगामी तीन महीनों में फतह का डंका बजाकर ही रहेंगे। यहाँ याद रखो सजनों कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है और इसे करना खुद ही है क्योंकि अपने मन की सफाई आप ही कर सकते हो, कोई दूसरा नहीं कर सकता। अतः अपने हृदय रूपी घर की सफाई करने में निपुण बनो। अगर ऐसा पुरुषार्थ कर लोगे तो जगत दंग हो उठेगा कि कलियुग में इस सजन ने वास्तविक रूप में जगत पर फतह पा ली है। सजनों अपनी शक्तियों का यानि ओज व तेज का भरपूर इस्तेमाल करो और सर्व-शक्तिमान बनो। ऐसा होते ही निश्चित रूप से 'ईश्वर है अपना आप', का दर्शन कर इस विचार पर स्थिर हो जाओगे। फिर जगत को प्राप्त करने के निमित्त जीवन-यापन नहीं करोगे बल्कि जगत को कुदरती नियमानुसार चलायमान रखने हेतु जीवन समर्पण कर दोगे ताकि अन्तर्घट तथा बाह्य वातावरण में समरस शान्ति स्थापित हो जाये। सजनों यह है - समरसता। फिर जीवन में जो भी ऊँच-नीच आये, आप समभाव से कभी नहीं डोलोगे। कोई आ रहा है, कोई जा रहा है, कोई हँस रहा है तो कोई रो रहा है - ऐसी जीवन की ऊँची-नीची परिस्थितियाँ आपको परेशान नहीं करेंगी। सजनों ऐसा होने पर आपकी मानसिक स्थिरता इतनी अधिक मजबूत हो जायेगी कि केवल एक दर्शन ही हर क्षण समक्ष बना रहेगा। यहाँ आकर माना जायेगा कि आपने मानव चोले का मकसद समझ लिया यानि आप यह जान गए कि यह जीवन है क्या और आपने यथार्थता से इस जीवन को जीते हुए सफल बना लिया। सजनों इस जीवन के खेल में जो भी सफल हो जाता है यानि फ़र्स्ट का नतीजा दिखाता है वह जीव परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाता है। अतः तीन महीने अपने ऊपर इतना सा ध्यानपूर्वक पहरा रखो। इस संदर्भ में सजनों यह तो स्वाभाविक ही है कि कोई लक्ष्य प्राप्त करना हो तो कठिनाई आती ही आती है। उस कठिनाई से घबराना नहीं यानि उसे रास्ते की बाधा मत बनने देना अपितु यह सुनिश्चित करना कि ख़्याल निरन्तर आगे बढ़ता जाये और शब्द में प्रवेश कर अन्ततः साक्षात्कार कर ले।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अगर आप अपना सजन बनना चाहते हो व अपने साथ औरों के भी सजन बनना चाहते हो तो आज की बात आपको स्मृति में रखनी होगी। फिर आपके अन्दर किस प्रकार व कितनी मात्रा में कलुकाल घुसा हुआ है, उसका आंकलन कर, श्रमपूर्वक सफाई करनी होगी। इस संदर्भ में अगर नित्य-प्रति जैसे-जैसे शास्त्रविहित् वचन सुनते जाओगे, वैसे वैसे आत्मसुधार करते जाओगे तो कारज आसान हो जायेगा। यदि आज सुनी फिर अगले इतवार को सुनी और वर्ताव में कुछ न लाए तो आत्मसुधार का यह कार्य बोझ बन जाएगा और सफाई मुश्किल हो जाएगी। सो ऐसा मत होने देना। इस हेतु मिलकर बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

अब आगे चलोः-

(श्री साजन जी हनुमान जी को कह रहे हैं)

ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा, नारद जी रहे ने बता, स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

तेरे बगैर कलयुग नू कौन हटावे।

तू है पातशांहवा दा शाह, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

कलुकाल ने हुन आन घबराया, भारत माता जी तुहानु बुलाया।

अंधेरे दा चानणा तू आ, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

प्रह्लाद दी ख़ातर नरसिंह अवतार तैं धारिया हरनाकश्यप हरनाकश नू मार पछाड़िया।

भक्त प्रह्लाद नू लिया ने छुड़ा, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

त्रेता युग विच अवतार तैं धारिया, राम रूप विच रावण नू मारिया।

रावण नू कीता ने तबाह, सीता माता नू लिया ने छुड़ा।।

द्वापर युग विच अवतार तैं धारिया, कृष्ण रूप विच कंस नू मारिया।

दुर्योधन दा कीता ने फनाह, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

कलुकाल विच तेरी है वारी, चाणना आवो श्री साजन सुखकारी।

अपना बाग तू आप लिशका, बुद्धि सब दी तू स्वच्छ बना।।

ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।

ध्वनिः- सिंहासन है हुन आपदा।।

ओथे जोत जगे ओ जगमग-जगमग।

हर वस्तु विच ओ जापदा।।

सजनों सतवस्तु का कुदरती शास्त्र हम सबको इस सत्य से अवगत करा रहा है कि आपकी सुरत/ख़्याल सीता महारानी है। अब जैसे लापरवाही करके सीता ने लक्ष्मण रेखा लाँघ ली थी और रावण उसे हर ले गया था, वैसे ही इन शास्त्र विहित विचारों की सीमा लाँघने पर आपके ख़्याल/सुरत का अपहरण भी जगत रूपी रावण ने कर लिया है और आपको जगत का वासी बना दिया है। अब जगत में हमेशा के लिये बने रहे तो कई प्रकार की यातनाएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जिस जीवन को कदम-कदम पर शास्त्र विहित विचारों अनुसार आगे बढ़ना था, वह जगतीय अज्ञान अनुसार चलने के कारण सद्मार्ग से भटक जाता है और मलीन हो जाता है। त्रेता युग में ऐसा नहीं हुआ। सीता महारानी को रावण हर कर ले गया, और उसे कई-कई विध् भान्ति-भान्ति की प्रताड़नाएँ भी दी पर वह फिर भी अपनी यथास्थिति में बनी रही। इस तरह वह लंका में रहकर भी श्री राम से विलग नहीं रही और रावण का संग उसने कदापि नहीं स्वीकारा। पर यहाँ तो आपने जगत का संग स्वीकार लिया है। इसी कारण आपका संकल्प कुसंगी हो गया है। संकल्प कुसंगी होने के कारण आपके मन में भिन्न-भिन्न प्रकार के नकारात्मक संकल्प, विचार और जगत से प्राप्ति की इच्छाएँ उत्पन्न होने लगी हैं। अब कहाँ तो आप दाता थे और कहाँ फकीरी धारण कर ली है क्योंकि प्राप्ति की इच्छाएँ उठने लगी हैं और ऐसा करना आपके स्वभाव के अन्तर्गत हो गया है। सजनों जानो यह अपनी स्वतन्त्रता को खोकर जीवन भर की अधीनता स्वीकार करने की बहुत बुरी बात है क्योंकि आप बुरे संग में उलझ गये हो। अब जब संग बुरा हो तो मन स्वच्छ कैसे रह सकता है। मन भी संकल्प-विकल्प के घेरे में आ गया है

और वहाँ से बाहर नहीं आ पा रहा। ऐसे में कैसे शान्ति प्राप्त हो सकती है ? सजनों यह एक बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा हो गया है। अब इस प्रश्न का शास्त्र विहित हल तो है पर अस्वस्थ होने के कारण आप यह हल खोज नहीं पा रहे। यही कारण है कि आप अपने ख़्याल को यथार्थ घर में स्थित करने में असमर्थ हो गये हो। चाहे आपको नाम-ध्यान की युक्ति मिली हुई हैं पर ख़्याल के अस्वच्छ होने के कारण युक्तियों का प्रयोग करने में भी आप कदापि सफल नहीं हो पा रहे। आज सबके साथ ऐसा ही हुआ पड़ा है। सबके पास सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति है पर उसका इस्तेमाल करना सबके लिये असम्भव हो रहा है। जानो ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि शहनशाह हनुमान जी की बात को मानना आपने उचित नहीं समझा। इसलिए आपकी बुद्धि मलिन हो गई, और मनुराज में चली गई। अब जब मन अतृप्त व अशान्त है तो ख़्याल नकारात्मकता में ही घूम रहा है व जीवन का हर परिणाम भी तद्नुसार नकारात्मक ही निकल रहा है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों अपनी मानसिकता स्थिर रखो क्योंकि स्थिर मानसिकता स्थिर बुद्धि होने का लक्षण है। इस विषय में चाहे आपको कोई कुछ भी कहता रहे, आप सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में उपलब्ध बौद्धिक बल का इस्तेमाल कर सद्-विचारो से कभी डोलायमान मत होवो चाहे प्राण ही क्यों न चले जायें। इस तरह इन विचारों को अपनी ताकत समझो और उनकी पालना हेतु सब न्यौछावर कर दो। याद रखो सजनों अगर उनके वचनों पर धर्मसंगत बने रहने की हिम्मत दिखाते हो तो प्राण भी कहीं नहीं जाते अपितु वह भी अपने घर जाकर विश्राम पा जाते हैं। सजनों आज आपको अपने जीवन का हितैषी बनने के प्रति सौगन्ध लेनी पड़ेगी। इस संदर्भ में अभी आपने श्री साजन जी की परोपकार प्रवृत्ति अनुसार जन-जन को आत्म-स्मृति में लाने का आदेश सुना। उन्होंने तो उस आदेशानुसार समस्त जगत के उद्धार के निमित्त सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ रच दिया। तभी तो शहनशाह अपने सुपुत्र श्री साजन जी को कहते हैं कि अब कलुकाल को विध्वंस कर सतयुग लाने की आपकी बारी है। सो हर जन-जन का ख़्याल जगत से हट आद् सत्य के संग जा जुड़े ऐसी युक्तियाँ इस ग्रन्थ में लिखी हुई हैं। हम पूछते हैं कि युक्ति पास होते हुए भी हम उसका इस्तेमाल क्यों नहीं करते? क्यों इसका प्रयोग करने में लाचार बने पड़े हैं? - हमारी लाचारी यह प्रगट करती है कि हमारा ख़्याल बार-बार सत्संग में आने के उपरान्त भी जगत में उलझा पड़ा है। अब तक तो हमारा ख़्याल जगत से आज़ाद हो जाना चाहिए था क्योंकि जगत अपने आप में बन्धन है। जानो जो जीवन में गुनाह करता है वही बन्धनमान होता है। इसके विपरीत जो निर्विकार है वह स्वतन्त्र होता है। उस स्वतन्त्र के लिये अपने सच्चे घर का रास्ता खुला है। इतनी नकारात्मकता दिखाने के बाद भी यह तीन महीने का समय एक

मौके के स्वरूप में कुदरत हमें दे रही है। इन तीन महीनों के मध्य तीन कार्यक्रम भी होने हैं, उनमें भी आपको आने का सुअवसर दिया जा रहा है। आप चाहो तो उसका लाभ उठा सकते हो जिस द्वारा आपको खड़े होने में मदद मिलेगी।

सजनों फिर कह रहे हैं कि अपने व सबके सजन बन जाओ क्योंकि 'सजन है कुल चानणा, सजन है कुल दीपक'। तीन महीनों में आपको सजनता का प्रतीक बनना ही बनना होगा। अतः बाहर से नही अपितु अन्दर से पुकारो कि हे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ! सुमति बक्षो। अब ठान लिया है कि आपके हर वचन को पूरी तरह से आदर देते हुए वैसा ही व्यावहारिक रूप अपनाऊँगा/अपनाऊँगी। ऐसा होने पर आपका काम आसान हो जायेगा। सजनों ऐसा करने के लिये सबको प्रेरित करो ताकि आने वाली सन्तति को आपकी तरह दुःखमय जीवन व्यतीत न करना पड़े। वास्तव में सबके सजन बन जाओ, झूठा प्यार मत जताओ, मत दिखाओ। आने वाली सन्तानों को सत्यज्ञान प्रदान करना ही सच्चा प्यार है। आज बच्चा पैदा हो तो उसको भी बताओ कि यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ तेरा जीवन ज्ञान है, इसके अतिरिक्त और कोई ज्ञान ग्रहण नहीं करना। आरम्भ से ही उसको नैतिक रूप से इस संग जोड़ दो, इस तरह इसमें आपका अपना भी कल्याण है। चलो अब आगे सुनो;-

श्री साजन जी पब्लिक को समझौता दे रहे हैं

(श्री रघुनाथ जी के मुख के शब्द)

शब्दः- जैंदी बुद्धि होई ए करूर मारिया वैसी, अन्धेरा हटना है जरूर मारिया वैसी।

रघुवर जी कोलों पहुंचो जरूर जन्म सफल बनैसी।।

चौपाई

राम नाम दी लवो दवाई। बुद्धि दी तुसी करो सफ़ाई।।

तिन खुराकां पीवो जरूर। तिन खुराकां पीवो जरूर।।

जन्म अपने नाल वैर न कमावीं। जन्म अपना सफ़ल बनावीं।।

तन मन अर्पण करो जरूर। तन मन अर्पण करो जरूर।।

द्वापर हटे कलुकाल आसी। जन्म अपने नूं ना लांवी फांसी।।

चौरासी भुगतनी पैसी ज़रूर। चौरासी भुगतनी पैसी ज़रूर।।

जे चौरासी दा हेई हुण डर। पहुंच रघुनाथ प्यारे दे घर।।

ओ दयालु तैनूं बचैसी। ओ दयालु तैनूं बचैसी।।

जन्म अपना सफल बनावो। इस दुनियां ते रौशन हो जावो।।

चानणा देखसी ओ ज़रूर। चानणा देखसी ओ ज़रूर।।

सजनों हम आशा करते हैं कि आप सबने यह कीर्तन ध्यान से सुना होगा। तो बताओ इसको सुनने के पश्चात् आपने क्या निश्चय लिया है? - मौत या मोक्ष ?

'मोक्ष' ।

सजनों मोक्ष उसको मिलेगा जो शास्त्र विहित वचनों को मानेगा और विचार-संगत जीवन जीना आरम्भ कर देगा। इसके विपरीत जो वचनों को नहीं मानेगा, उसका नतीजा मौत है। इसमें उमर का कोई सवाल नहीं क्योंकि जीवन का अन्त कभी भी हो सकता है। अतः जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाना क्योंकि हर क्षण कीमती है।

एक बार श्वास निकल गया तो मौत का पैगाम सामने आ जायेगा। इस सन्दर्भ में जानो व मानो कि जीवन में कुछ भी अच्छा प्राप्त करने के लिये सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण बनना होगा। ऐसा तीक्ष्ण बुद्धि विचारशील इन्सान बनने के लिये आपके पास सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कुदरती ज्ञान निहित/उपलब्ध है। इसी का अध्ययन, चिन्तन, मनन व धारण करोगे तो निःसन्देह आपके जीवन का परिणाम मोक्ष ही होगा। अगर इस क्रिया में कमजोर रहे या आज का काम कल पर छोड़ा तो मौत की आगोश में यानि चौरासी लाख योनियों में भटकना सुनिश्चित है। अब इसी लक्ष्य यानि मोक्ष की ओर अग्रसर होने हेतु सकुचाना नहीं। याद रखना शास्त्र विहित वचनों अनुसार मन-मस्तिष्क की सफाई करने से आप बुद्धिमान बन जाओगे। अब बताओ कि सबसे बुद्धिमान कौन है?

'सजन श्री शहनशाह हनुमान जी' ।

तो फिर उन्हीं की तरह बुद्धिमान बनो व आत्मोद्धार करो। इस संदर्भ में सजनों आपके व कुल समाज को दुर्भावों से उबार सद्भावों में लाने हेतु सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की अनुकम्पा से अलग-अलग माध्यमों से प्रोग्राम किये जा रहे हैं

ताकि आप जगत में भूले भटके इन्सान पुनः आत्मस्मृति में आ अपना जीवन बना सको। अतः इन कार्यक्रमों में अपने साथ-साथ अपने बच्चों, परिवारों व समाज को सम्मिलित कर, इनका पूरा लाभ उठाओ व परोपकार कमाओ।

आप सभी इसमें कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।